श्रीनागदेवता मंत्र, अष्टोत्तर शतनामावली एवं स्तुति

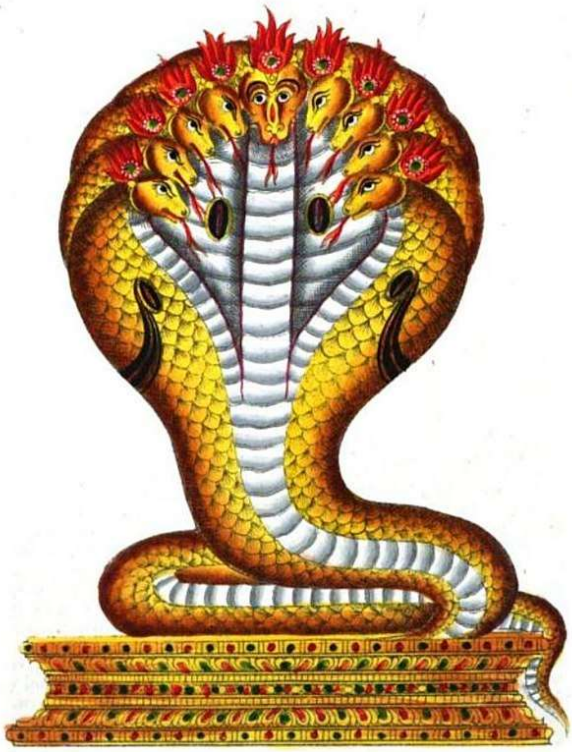

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

नागदेवताकी विधिवत् पूजा करनेसे वंशवृद्धि, धनवृद्धि और अकस्मात् लक्ष्मी प्राप्ति के योग बनते हैं। पितरदोष, शत्रुबाधा और कालसर्प दोष भी धीरे–धीरे शांत होते हैं। पृथ्वी के भीतर जितना भी छिपा हुआ धन है, उन सब पर भी दिव्यनागों का ही पहरा होता है। अतः इनकी प्रसन्नताके उपरान्त् ही भूधन को प्राप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त जिस वंशमें नागदेवताकी पूजा होती है, वहां किसीको सर्पभय नहीं होता और भगवान् शंकर और विष्णुजीकी भी कृपा सदैव बनी रहती है। शतनामावली के द्वारा पाठ, हवन अथवा अभिषेक किया जा सकता है। एक स्त्री ने मुझसे नागदेवता हवन करवाया था। उसी रात्रिकालमें उस स्त्रीको सुनहरे रंगके पांच फनधारी नागदेवता उसके मस्तक पर बैठे हुए दिखाई दिये और उसके मस्तकसे धीरे–धीरे नीचे से निकलकर चले गये। सपनेमें मैं भी उसी स्थान पर था। उस स्त्रीने सपनेमें ही मुझसे इसका अर्थ पूछा। सपनेमें मैंने उससे कहा कि नागदेवता तुम्हें आशीर्वाद देने आये थे। और भी कई दिव्य अनुभव हैं नागदेवता की कृपाफल के, जिसे सार्वजनिक रूपसे प्रकट नहीं किया जा सकता है। समुद्र मंथनके समय निकले हुए विषके कुछ अंशको नागों और सर्पोंने भी ग्रहण किया था। तभीसे नाग और सर्प शिवजीके प्रिय और सबके पूजनीय हुए।

शेषनागजी की न्याय कथा– एक बार बात ही बातमें विश्वामित्रजीसे वसिष्ठजी विवाद छिड़ गया कि तपस्या बड़ी है या सत्संग। वसिष्ठजी का

कहना था कि सत्संग बड़ा है और विश्वामित्रजी का कहना था कि तपस्या बड़ी है। इस विवादका निर्णय करानेके लिये अंतमें दोनों शेषनागजीके पास गये। सब बातें सुनकर शेषभगवान्‌ने कहा– भाई! अभी तो मेरे सिर पर पृथ्वीका भार है। आप दोनोंमें कोई एक थोड़ी देर के लिये इसे ले लो तो मैं निर्णय कर सकता हूं। विश्वामित्र अपनी तपस्याके घमण्डमें फूले हुए थे, उन्होंने दस हजार वर्षकी तपस्याके फल का संकल्प किया और पृथ्वीको अपने सिर पर धारण करनेकी चेष्टा की। लेकिन पृथ्वी कांपने लगी, सारे संसारमें तहलका मच गया। तब वसिष्ठजीने अपने आधे क्षणके फल का संकल्प करके पृथ्वीको धारण कर लिया और बहुत देर तक सकुशल धारण किये रहे। अंतमें जब शेषभगवान् फिर पृथ्वीको लेने लगे, तब विश्वामित्र बोले– अभी आपने निर्णय सुनाया ही नहीं। शेषभगवान् हंस पड़े और बोले– निर्णय तो अपने आप हो गया। आधे क्षण के सत्संगकी बराबरी हजारों वर्षकी तपस्या नहीं कर सकी। इस प्रकार महर्षि वसिष्ठजी का माहात्म्य सब प्रकारसे निखर उठने पर भी उनमें लेशमात्र अभिमान प्रविष्ट नहीं हो पाया था। इसका भावार्थ यह है कि तपस्या से केवल मनुष्य अपना कल्याण करता है और सत्संग का प्रचार करनेसे कई लोगोंका कल्याण होता है। हर एक उपायसे लोभ और क्रोधको दबाना ही पवित्र ज्ञान और आत्म संयम है। क्रोध और लोभ मनुष्यके कल्याणमें सदा ही बाधा पहुंचानेको उद्यत रहते हैं, अतः पूरी शक्ति लगाकर उनका दमन करना चाहिये। क्रोधसे लक्ष्मीको,

ईर्ष्यासे तपको, मान अपमानसे विद्याको और नशेसे अपनी आत्मा की रक्षा करनी चाहिये। जिसके सभी कार्य कामनाओंके बंधनसे रहित होते हैं तथा जिसने त्यागकी आगमें सब कुछ होम कर दिया है, वही त्यागी और बुद्धिमान् है।

नाग गायत्रीमंत्र– 'ॐ नवकुल नागाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्।' ध्यान के विकल्पमें 5 बार नागगायत्रीका उच्चारण कर सकते हैं।

नागसिद्धिमंत्र– 'ॐ नाग देवताय स्वाहा'। रात्रिकालमें जप करनेसे श्रेष्ठ फल मिलता है। स्वप्नमें या जप अवस्थामें क्षणभरके लिये नागदेवताके दर्शन होंगे। शेषनाग अपने पूरे पांच फणोंके साथ उठे हुए दिखाई दे तो शीघ्र लाभ होगा। सफेद और सुनहरे रंग के नागदेवता दिखने पर अत्यन्त शुभ एवं शीघ्र फल मिलता है। सपनेमें सफेद नाग दिखना पितरोंकी प्रसन्नताका सूचक है।

नागास्त्रमंत्र– 'ॐ नागास्त्राय स्वाहा।' इस मंत्र का प्रयोग विशेष संकटकालमें गुरु आज्ञा उपरान्त् ही करने का अधिकार है।

नागदेवता 108 नाम– ॐ अनन्ताय नमः। ॐ शेषाय नमः। ॐ वासुकये नमः। ॐ तक्षकाय नमः। ॐ शंखपालाय नमः। ॐ महापद्माय नमः। ॐ कम्बलाय नमः। ॐ कर्कोटकाय नमः। ॐ कुलिकाय नमः। ॐ फणिराज्ञे नमः।10।

ॐ स्थिराय नमः। ॐ प्रभवे नमः। ॐ भीमाय नमः। ॐ प्रवराय नमः। ॐ वरदाय नमः। ॐ पराय नमः। ॐ मणिमण्डलभूषिताय नमः। ॐ सर्वात्मने नमः। ॐ सर्वविख्याताय नमः। ॐ सर्वस्मै नमः।20।

ॐ सहस्रपदे नमः। ॐ वाताशनाय नमः। ॐ उरगाय नमः। ॐ कालेयाय नमः। ॐ कम्बुकण्ठाय नमः। ॐ विषकलाय नमः। ॐ मणिभूषणाय नमः। ॐ सुलक्षणाय नमः। ॐ सर्वज्ञाय नमः। ॐ भयाय नमः।30।

ॐ गरिम्णे नमः। ॐ गर्विणे नमः। ॐ सर्वांगाय नमः। ॐ सर्वभावनाय नमः। ॐ सर्वभूतहराय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ पातालवासिने नमः। ॐ महायशसे नमः। ॐ महाकायाय नमः। ॐ पन्नगाय नमः।40।

ॐ शंकरभूषणाय नमः। ॐ अनन्तशिखिने नमः। ॐ पातालधारिणे नमः। ॐ यमुनान्तर्वासिने नमः। ॐ विषग्रहाय नमः। ॐ विषहन्त्रे नमः। ॐ नागेन्द्राय नमः। ॐ नागकन्यापरिवृताय नमः। ॐ नागलोकाधिपतये नमः। ॐ कालघ्ने नमः।50।

ॐ रुद्राभूषणाय नमः। ॐ रुद्रालंकाराय नमः। ॐ विषात्मने नमः। ॐ कामाय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ कालयोगिने नमः। ॐ सहस्रफणाय नमः। ॐ शतफणाय नमः। ॐ अनन्तफणाय नमः। ॐ भुजंगाय नमः।60।

ॐ बलिने नमः। ॐ कालियाय नमः। ॐ विषरूपाय नमः। ॐ विषप्रदाय नमः। ॐ अतुलितबलाय नमः। ॐ पातालनिवासिने नमः। ॐ कालरूपाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ भंयकराय नमः। ॐ कालपतये नमः।70।

ॐ नीलये नमः। ॐ नीलरूपाय नमः। ॐ नीलशरीराय नमः। ॐ कलिनाशनाय नमः। ॐ सर्पराज्ञये नमः। ॐ कालानिलद्युतये नमः। ॐ विषप्रकृतये नमः। ॐ विषधराय नमः। ॐ विषप्रियाय नमः। ॐ विषाक्ताय नमः।80।

ॐ विषप्रदाय नमः। ॐ विषनिधये नमः। ॐ विषशरीराय नमः। ॐ वसुश्रेष्ठाय नमः। ॐ मनोवांछितप्रदाय नमः। ॐ कालाभयानन्तरूपाय नमः। ॐ धनरक्षकाय नमः। ॐ कृष्णपिंगलाय नमः। ॐ कृष्णवर्णाय नमः। ॐ ऊर्ध्वगात्मने नमः।90।

ॐ अनन्तरूपाय नमः। ॐ स्वयम्भुवे नमः। ॐ महाभीमाय नमः। ॐ निर्वाणाय नमः। ॐ मोक्षकराय नमः। ॐ शंकरप्रियाय नमः। ॐ महाभयनाशकाय नमः। ॐ सर्वव्याधिनिवारकाय नमः। ॐ विषबाधा विनाशकाय नमः। ॐ नागराज्ञे नमः।100।

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

ॐ अनन्तनाम्ने नमः। ॐ रसातलसमाश्रिताय नमः। ॐ धराधारिणे नमः। ॐ भक्तानामभयंकराय नमः। ॐ सौभाग्यदाय नमः। ॐ सदासेव्याय नमः। ॐ ज्ञानगम्याय नमः। ॐ ब्रह्मासनाय नमः।108।

देवर्षि नारद कृत पाताल महिमा एवं शेषनाग स्तुति– पृथ्वी के भीतर सात तल हैं, जिनमें से एक प्रत्येक की ऊंचाई दस–दस हजार योजन की है। उन सात तलों के नाम ये हैं– अतल, वितल, नितल, सुतल, तलातल, रसातल और पाताल। इनकी भूमि क्रमशः काली, सफेद, लाल, पीली, कंकरीली, पथरीली तथा सुवर्णमयी है। सातों ही तल बड़े–बड़े महलों से सुशोभित हैं। उनमें दानव और दैत्यों की सैकड़ों जातियां निवास करती हैं। विशालकाय नागों के कुटुम्ब भी उनके भीतर रहते हैं। एक समय पाताल से लौटे हुए देवर्षि नारदजी ने स्वर्गलोक की सभामें कहा था– पाताललोक स्वर्गलोक से भी रमणीय है। वहां सुन्दर प्रभायुक्त चमकीली मणियां हैं, जो परमानन्द प्रदान करने वाली हैं। वे नागों के अलंकारों एवं आभूषणों के काम आती हैं। भला, पाताल की तुलना किससे हो सकती है। वहां सूर्य की किरणें दिनमें केवल प्रकाश फैलाती हैं, धूप नहीं। इसी प्रकार चन्द्रमा की किरणें रातमें केवल उजाला करती हैं, सर्दी नहीं फैलाती। वहां सर्प और दैत्यादि भक्ष्य, भोज्य तथा सुरापानके मदसे उन्मत्त होकर यह नहीं जान पाते कि कब कितना समय बीता है। वहां वन, नदियां, रमणीय सरोवर, कमलवन तथा

अन्य मनोहर वस्तुएं हैं, जो बड़े सौभाग्य से भोगने को मिलती हैं। पाताल निवासी दानव, दैत्य तथा सर्पगण सदा ही उन सबका उपभोग करते हैं। सब पातालों के नीचे भगवान् विष्णु का तमोमय विग्रह है, जिसे शेषनाग कहते हैं। दैत्य और दानव उनके गुणों का वर्णन करनेमें समर्थ नहीं है। सिद्ध पुरुष उन्हें अनन्त कहते हैं, देवता और देवर्षि उनकी पूजा करते हैं। वे सहस्रों मस्तकों से सुशोभित हैं। स्वास्तिक आकार निर्मल आभूषण उनकी शोभा बढ़ाते हैं। वे अपने फणों की सहस्रों मणियों से सम्पूर्ण दिशाओं को प्रकाशित करते हैं तथा संसार का कल्याण करने के लिये सम्पूर्ण असुरों की शक्ति हर लेते हैं। उनके कानों में एक ही कुण्डल शोभा पाता है। मस्तक पर किरीट और गले में मणियों की माला धारण किये भगवान् अनन्त अग्नि की ज्वाला से प्रकाशमान श्वेत पर्वत की भांति शोभा पाते हैं। वे नील वस्त्र धारण करते, मद से मत्त रहते और श्वेत हार से ऐसे सुशोभित होते हैं, मानो आकाश गंगा के प्रताप से युक्त उत्तम कैलास पर्वत शोभा पा रहा हो। उनके एक हाथ का अग्रभाग हल पर टिका रहता है और दूसरे हाथमें वे उत्तम मूसल धारण किये हुए हैं। प्रलयकालमें विषाग्नि की ज्वालाओं से युक्त संकर्षणात्मक रुद्र उन्हीं के मुखों से निकलकर तीनों लोकों का संहार करते हैं। सम्पूर्ण देवताओं से पूजित वे भगवान् शेष पाताल के मूलभागमें स्थित होकर अपने मस्तक पर समस्त भूमण्डल को धारण किये रहते हैं। उनके

वीर्य, प्रभाव, स्वरूप तथा रूपका वर्णन देवता भी नहीं कर सकते। जिनके मस्तक पर रखी हुई समूची पृथ्वी उनके फणों की मणियों के प्रकाश से लाल रंग की फूलमाला सी दिखाई देती है, उनके पराक्रम का वर्णन कौन कर सकता है? भगवान् अनन्त जब जम्बाई लेते हैं, उस समय पर्वत, समुद्र और वनों सहित यह सारी पृथ्वी डोलने लगती है। गंधर्व, अप्सरा, सिद्ध, किन्नर और सर्प– कोई भी उनके गुणों का अन्त नहीं पाते। इसीलिये उन अविनाशी प्रभु को अनन्त कहते हैं। जिनके ऊपर नागबंधुओं के हाथों से चढ़ाया हुआ हरिचन्दन बारंबार श्वास वायु के लगने से सम्पूर्ण दिशाओं को सुवासित करता रहता है। प्राचीन ऋषि गर्ग ने जिनकी आराधना करके सम्पूर्ण ज्योतिषशास्त्र का यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया था, उन्हीं नागश्रेष्ठ भगवान् शेष ने इस पृथ्वी को धारण कर रखा है और वे ही देवता, असुर और मनुष्यों के सहित समस्त लोकों का भरण पोषण करते हैं। (श्रीब्रह्मपुराणे)

Gurudev Raj Verma

Mob- +91-9897507933

WhatsApp- +91-7500292413

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

Website- mahakalshakti.wordpress.com

Website- www.scribd.com/mahakalshakti

Email- mahakalshakti@gmail.com

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413